पद्मकान्त मालवीय
भू० पू० सम्पादक 'अभ्युदय'

XXVI A/264

"पद्म निवास"
द्रौपदीघाट
इलाहाबाद

१९६

आदरणीय जगत बाबू,

प्रणाम ।

नैमिषारण्य में आप से भेंट न हो सकी इसका दुःख रहा । स्वामी नारदा नन्द जी अच्छा काम कर रहे हैं । उनकी सहायता हम लोगों को करनी ही चाहिये ।

आज एक विशेष प्रयोजन से आप को यह पत्र लिख रहा हूं । पत्र वाहक पं० योगेश्वर मिश्र मेरे आध्यात्मिक गुरु बरौनी निवासी प्रसिद्ध शाक्त महात्मा स्वर्गीय पं० केशव मिश्र जी के द्वितीय पुत्र हैं । नवीन साहित्याचार्य और साधक हैं । अब आवश्यक है कि गृहस्थ धर्म का भी सुचारु रूप से पालन करें । यहां आने को यह तैयार नहीं । फिलहाल बिहार में ही रहना चाहते हैं । मैं चाहता हूं कि वहां इन्हें कोई ऐसा कार्य दिलवा देने में आप इनकी सहायता कर दें जिससे यह कार्य करते हुये स्म०ए० कर लें और इनकी साधना में भी व्याघात न पहुंचे ।

मैं व्यक्तिगत परिचय न होते हुये भी विनोद बाबू और शिक्षा मंत्री को लिख रहा हूं । आप भी तनिक निजी रुचि लेकर इनकी सहायता कर दें तो बड़ी कृपा होगी । आभारी हूंगा ।

आशा है आप प्रसन्न और स्वस्थ्य होंगे ।

आप का

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

पद्मकान्त मालवीय
भू० पू० सम्पादक 'अभ्युदय'

"पद्म निवास"
द्रौपदीघाट
इलाहाबाद १९६

आदरणीय जगत बाबू,

प्रणाम ।

नैमिषारण्य में आप से भेंट न हो सकी इसका दुःख रहा । स्वामी नारदा नन्द जी अच्छा काम कर रहे हैं । उनकी सहायता हम लोगों को करनी ही चाहिये ।

आज एक विशेष प्रयोजन से आप को यह पत्र लिख रहा हूं । पत्र वाहक पं० योगेश्वर मिश्र मेरे आध्यात्मिक गुरु बरौनी निवासी प्रसिद्ध शाक्त महात्मा स्वर्गीय पं० केशव मिश्र जी के द्वितीय पुत्र हैं । नवीन साहित्याचार्य और साधक हैं । अब आवश्यक है कि गृहस्थ धर्म का भी सुचारु रूप से पालन करें । यहां आने को यह तैयार नहीं । फिलहाल बिहार में ही रहना चाहते हैं । मैं चाहता हूं कि वहां इन्हें कोई ऐसा कार्य दिलवा देने में आप इनकी सहायता कर दें जिससे यह कार्य करते हुये एम०ए० कर लें और इनकी साधना में भी व्याघात न पहुंचे ।

मैं व्यक्तिगत परिचय न होते हुये भी विनोद बाबू और शिक्षा मंत्री को लिख रहा हूं । आप भी तनिक निजी रुचि लेकर इनकी सहायता कर दें तो बड़ी कृपा होगी । आभारी हूंगा ।

आशा है आप प्रसन्न और स्वस्थ्य होंगे ।

आप का

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(2 Copies on personal)

आदरणीय जगत बाबू, प्रणाम।

~~अधिक स्टेशन पर~~ नैमिषारण्य में आपसे भेंट न हो सकी इसका दुःख रहा। स्वामी नारदा-नन्दजी अच्छा काम कर रहे हैं। उनकी सहायता हमलोगों को करनी ही चाहिये।

आज एक विशेष प्रयोजन से आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। पत्रवाहक पं: योगेश्वर मिश्र मेरे आध्यात्मिक गुरु बहेरी निवासी प्रसिद्ध शाक्त महात्मा स्वर्गीय पं: केशवरामजी के द्वितीय पुत्र हैं। नवीन साहित्याचार्य और साधक हैं। अब आवश्यक है कि गृहस्थाश्रम का भी सुचारु रूप से पालन करें। यहाँ आने को यह तैयार नहीं। फिलहाल बिहार में ही रहना चाहते हैं। मैं चाहता हूँ कि वहीं इन्हें कोई ऐसा कार्य दिलवा देने में आप इनकी सहायता करें जिसमें यह कार्य करते हुये एम.ए. कर लें और इनकी साधना में भी व्याघात न पहुंचे।

मैं व्यक्तिगत परिचय न होते हुये भी विनोद बाबू और सिद्धान्तीजी को लिख रहा हूँ। आप भी तनिक निजी रुचि लेकर इनकी सहायता करें तो बड़ी कृपा होगी। आभारी हूँगा।

आशा है आप प्रसन्न और स्वस्थ होंगे।

आपका